सूकरों में होने वाली प्रमुख बिमारीयाँ एवं बचाव :

स्वाईन फिवर / सूकर ज्वर

सूकर ज्वर विषाणु द्वारा होने वाली एक अत्यन्त संक्रामक बीमारी है जो कि केवल सूकरों में ही होती है। यह बीमारी होने पर सूकर पालको को बहुत ही हानि का सामना करना पड़ता है। यह बिमारी बीमार सूकरों के मल–मूत्र, दूषित खाना एवं पानी बीमार पशु के स्वस्थ सूकर साथ रखने आदि से फैलती है। इस बिमारी में अचानक मृत्यु, तेज बूखार (106–1070से0), भूख की कमी, सुस्ती, कमजोरी चलने में लड़खड़ाहट, कब्ज के बाद दस्त तथा उल्टी का होना, शरीर की त्वचा पर लाल धब्बा दिखना, आँखे लाल होना, आदि प्रमुख लक्षण है। इस बीमारी से बचाने के लिए सूकरों में टीकाकरण ही सबसे अच्छा तरीका है।

खुरपका–मुँहपका रोग (एफ.एम.डी.रोग)

खुरपका–मुँहपका रोग पशुओं का एक भयानक संक्रामक रोग है। यह मुख्यतः गो–पशु, भेड़, बकरी तथा सूकरों मे होता है। यह विषाणु मुँह, जीभ तथा खुरों के आस–पास की त्वचा पर आक्रमण करता है। संक्रमण के स्थान पर छाला बन जाता है। रोगी पशु को बुखार आने लगता है। खाना नहीं खाता है तथा प्यास बहुत लगती है। मुँह और पैरों पर छाले दिखाई देते हैं। पैरों में लंगड़ापन शुरू हो जाता है पशु अक्सर अपने पैरों के बीच के भाग को चाटता है एवं पशु के मुँह से लार टपकने लगता है। इस रोग के नियंत्रण हेतु स्वच्छता पर पूरा ध्यान देना चाहिए। घाव को 2 प्रतिशत फिटकरी के घोल या 5 प्रतिशत पोटेशियम परमैंगनेट के घोल से धोना चाहिए। इसके अलावा ग्लिसरीन एवं शहद को एक और सात भाग के अनुपात में मिलाकर जीभ के छालों पर लगाने से पशुओं को दर्द से राहत मिलती है तथा घाव भरने में सहायता मिलती है। सूकरों के समय–समय पर खुरपका–मुँहपका का टीके लगवाकर इस रोग से बचाया जा सकता है।

सूकरों में बिमारी से बचाव हेतु टिकाकरण

बीमारी का नाम	पहला टीका	दूसरा टीका	आगे का टीककाकरण
सूकर ज्वर (Swine fever)	1.5–2 माह की उम्र	छः माह बाद	हरेक छः माह पर
खुरहा–मुँहपका (FMD)	1.5–2 माह की उम्र	छः माह बाद	हरेक छः माह पर

लाभदायक सुकर पालन के लिए ध्यान देने योग्य बाते–

- सूकरों के लिए आवास की व्यवस्था में इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि ये साफ सुथरे एवं हवादार हो।
- 4–6 सप्ताह में नर बच्चे का जिन्हें प्रजनन के लिए नहीं रखना है, बधिया करा देना चाहिए।
- गर्भवती सूकरी को बच्चा देने के कम से कम 10 दिन पहले प्रसुति गृह में अकेले रख देना चाहिए।
- बच्चा देने के बाद सुकरी झाल गिराती है जिसे तुरन्त प्रसव गृह से निकाल देना चाहिए।

सूकर मांस की बढ़ती हुई मांग से अनुमान लगाया जा सकता है कि अगले दशक में सूकर पालन एक विकसित व्यवसाय के रूप में उभर कर आने की उम्मीद की जा रही है। सूकर पालन के लाभ को देखते हुए हमारे भारतीय समाज में समाजिक तौर पर भी इस व्यवसाय को वैज्ञानीक तरीके से करने की सहमती दिखाई दे रही है।

डा0 रविन्द्र कुमार डा0 सुशील प्रसाद, डा0 निशांत पटेल डा0 मुकेश कुमार, डा0 शैलेन्द्र कुमार रजक, डा0 पवन कुमार वर्मा, डा0 निर्मला मिंज, डा0 सुसवी कुमारी, डा0 सचीन त्रिपूरा

डॉ रविन्द्र कुमार
वैज्ञानिक
पशु उत्पादन एवं प्रबंधक विभाग
राँची पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय

झारसुक सूकर पालन - कम पूँजी ज्यादा आय

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय
राँची–834 006 (झारखण्ड)

झारसुक सूकर पालन – कम पूँजी ज्यादा आय

झारखण्ड में सूकर पालन का एक खास महत्व है और यह कमजोर वर्ग के किसानों कि अर्थिक स्थिति मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सूकर पालन आदिवासियों के बीच काफी लोकप्रिय है और यह मिश्रित खेती के लिए भी अनुकूल है।

झारखण्ड में बढ़ती हूई मांस की मांग और इसकी उपलब्धता के बीच कि बढ़ती दूरी को कम करने के लिए यह आवश्यक है कि मांस उत्पादित पशुओं को बढ़ावा दिया जाए। इसमें भी सूकर पालन से मांस उत्पादन को काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है। जिसका मुख्य कारण है सूकर पालन आसानी से कम खर्च मे शुरूआत किया जा सकता है क्योंकि अन्य पशुओं कि तुलना के लिए आवास एवं रख–रखाव बहुत ही कम खर्च आता है।

आज इसका आर्थिक महत्व देखते हुए समाज के हर वर्ग के लोग आगे आ रहे हैं। सूकर मांस की बढ़ती हुई मांग के कारण अब कुछ लोग उच्च स्तर पर सूकर पालन कर अधिक धन कमाना चाह रहे हैं। आज देश में बढ़ते सूकर पालन के निम्न प्रमुख कारण हैं–

1. लोगों का शाकाहारी से मांसाहारी भोजन की ओर झुकाव।
2. सूकर मांस का स्वादिष्ट होना।
3. कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के कारण राशन की पर्याप्त उपलब्धता।
4. बेकार खादय पदार्थ जिसे अन्य पशु उपयोग नहीं कर सकती है जैसे होटल या मेस आदि की जूठन सामाग्री, खादय पदार्थों के कारखानों से निकले बेकार पदार्थ, लोकल शराब बनाने के बाद बचे अवशेष आदि का सूकर में ही उचित उपयोग होता है।
5. सूकर पालन कम खर्च से शूरूआत की जा सकती है, क्योकि इनकी आवास एवं प्रबंधन का खर्च अन्य पशुओं की तुलना में सस्ता होता है।

झारखण्ड मे सूकर पालन फायदे

1. सूकर मांस पशु जन्य प्रोटीन है जिससे गरीब एवं पिछड़े लोगो को पौष्टिक भोजन प्रदान कर कुपोषण की समस्या को दूर किया जा सकता है।
2. आर्थिक रूप से पिछड़े एवं भूमिहीन कृषि मजदूरों को भी रोजगार प्रदान किया जा सकता है।
3. ब्रायलर के बाद सूकर में भोजन को मांस मे परिवर्तित करने की क्षमता अन्य मांस उत्पादित पशुओं कि तुलना में सबसे अधिक है।
4. सूकर बेकार खादय पदार्थ जैसे खराब हुआ खादय पदार्थ, रसोइघर का बचा खाना, खराब सब्जियाँ, हरा चारा आदि को महत्वपूर्ण पौष्टिक मांस में बदलने की क्षमता रखता है। अतः खाने की खर्च को कम करके अधिक लाभ कमाया जा सकता है।
5. सूकर कम समय में अधिक बच्चे देने वाला पशु है। सूकरी 8–9 माह की उम्र में गर्भवती हो जाती है तथा एक साल में दो बार और एक बार में 8–12 बच्चे दे सकती है।
6. भवन निर्माण एवं उपकरणों पर ज्यादा खर्च नहीं है।
7. सूकर मांस में वसा की मात्रा अधिक तथा पानी की मात्रा कम होती है जिसकी वजह से इसमें ऊर्जा अधिक होती है साथ ही साथ इसमें खनिज, प्रोटीन विटामीन काफी मात्रा में होते हैं जो कि सूकर मांस को काफी पौष्टिक एवं स्वादिष्ट बना देता है।
8. सूकर पालन की शूरूआत कम लागत से कर सकते हैं तथा जल्द ही आमदनी होने लगती है। जिसका मुख्य कारण की नर 8–10 माह में मांस के लिए तैयार हो जाता है तथा सूकर छौने (बच्चे) को माँ से अलग करने के बाद (आठ सप्ताह के बाद) बेच सकते हैं।
9. अन्य व्यवसाय जैसे दूध और अंडा उत्पादन की तरह पूरे दिन इसकी देखभाल करने कि जरूरत नहीं है।
10. सूकर खाद का उयोग खेतों की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में कर सकते है। तथा मछली तालाब में इसका उपयोग करने से मछलियाँ तेजी से बढ़ती है।

सूकर पालन को अधिक लाभकारी बनाने के लिए अन्नत नस्ल का चुनाव एवं वैज्ञानीक तरीके से रख–रखाव बहुत जरूरी है।

झारखण्ड मे सूकर पालन हेतू नस्ल का चुनाव

सूकर के नस्ल के मामले में भारतवर्ष पिछड़ा है। सूकर का कोई भी अपना नस्ल भारत में नहीं है। आजकल विदेशों में पाई जानेवाली विकसित नस्लों का प्रयोग राजकीय सूकर फार्मो में प्रजनन के लिए किया जा रहा है। इसी विदेशी नस्ल का उपयोग कर बिरसा कृषि विश्वविद्यालय अन्तर्गत राँची चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय के वैज्ञानिकों के अ प्रयास से झारसूक नामक नस्ल अविष्कार किया। यह ग्रामीण वातावरण के लिए बहुत उपयोगी है तथा देशी नस्ल तुलना में 4–5 गुना अधिक लाभकारी है। सूकर पालन को भी लाभकारी बनाने के लिए खाने के खर्च को कम करना जरूरी है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए झारखण्ड के र पालक विभिन्न प्रकार के बेकार खादय पदार्थ जैसे होटलों जूठन सामाग्री, हड़िया बनाने के बाद बेकार बचा हुआ साम जंगली फल, घास आदि का उपयोग कर खाने के खर्च काफी हद तक कम कर सकते हैं।

झारसूक की विशषताएँ

- बनावट : यह नयी प्रजाति देखने में काफी मनमो चमकीले बालों वाली तथा शरीर से काफी सुडौल होती है
- काला रंग : यह एक काले रंग की नस्ल है, फलस्व इसका माँस उजले सूकर के माँस की अपेक्षा महंग आसानी से बिकता है।
- बेहतर वृद्धि दर : यह नयी प्रजाति एक वर्ष की उ ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 100 किलो वजन का होत जबकि देशी सूकर मात्र करीब 40 किलो वजन का ह पाता है।
- बेहतर प्रजनन क्षमता : देशी सूकरी एक बार में 4 बच्चे देती है जबकि झारसुक 8 से 12 बच्चे देती है नयी प्रजाति वर्ष में दो बार बच्चा देती है जबकि सूकरी दो वर्ष में मात्र तीन बार बच्चे देती है।
- बेहतर आहार क्षमता : देशी सूकर एक किलो शर वृद्धि के लिए इस नयी प्रजाति की तुलना में डेढ़ अधिक दाना मिश्रण खती है।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता : देशी सूकर में चर्म रोग से रहती है और दस्त की बिमारियाँ भी बहुत कम होती है
- अनुकूलनशीलता : देशी व देशी सूकर के बदले यह प्र ग्रामीण वातावरण में आसानी से पाली जा सकती है।
- आर्थिक लाभ : देशी की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में या प्रजाति आर्थिक दृष्टिकोण से करीब चार से पाँच अधिक लाभकारी है। इस संकर किस्म के एक सूकर पालते हुए उनके छौनों को 10 से 12 माह में बिक्री प्रति वर्ष करीब 20 हजार रू. का शुद्ध लाभ होता है ज स्थानीय किस्मों से मात्र 5 हजार ही होता है।